परमात्म शक्तियों और वरदानों की अनुभूति

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

परमात्मा पिता अनन्त शक्तियों और वरदानों के भण्डार हैं परंतु प्रश्न यह उठता है कि इन शक्तियों और वरदानों को प्राप्त करने वाला कौन है? जैसे बरसात पड़ती है तो प्यासी धरती उसे सोख लेती है और बदले में हरी-भरी होकर जगत की पालना करती है। सूर्य की धूप आती है, उसे मानव शरीर, पेड़-पौधे, जीव-जंतु स्वीकार कर उपयोग में लाते हैं। हवा चलती है, उससे भी मानव तथा पर्यावरण लाभान्वित होता है। ये सब भौतिक शक्तियाँ हैं जिन्हें यह स्थूल जगत प्राप्त करता है और अपनी क्रियाओं को आगे बढ़ाता है परन्तु ईश्वरीय शक्तियाँ और वरदान तो सूक्ष्म हैं। उन्हें प्राप्त करने वाली कोई सूक्ष्म सत्ता ही होनी चाहिये। यह सूक्ष्म सत्ता कौन है? वास्तव में, मानव शरीर स्थूल और सूक्ष्म दो शक्तियों से निर्मित है। स्थूल है यह शरीर और सूक्ष्म है आत्मा। आत्मा एक अभौतिक ऊर्जा है जो भौतिक शरीर की भृकुटी में स्थित हो इसे संचालित करती है। यह अति सूक्ष्म, स्थूल नेत्रों द्वारा न देखी जा सकने वाली, अति शक्तिशाली सत्ता है। यह रूप में ज्योतिबिन्दु है और मन, बुद्धि, संस्कार सहित है। सोचना, याद रखना, निर्णय करना, कल्पना करना आदि सभी गुण इस चेतन आत्मा में ही हैं। आत्मा के चले जाने पर शरीर मात्र पाँच तत्वों का निर्जीव ढांचा रह जाता है। ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों को ग्रहण करने वाली यह आत्मा ही है। ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों की प्राप्ति के लिए आत्मा (मन-बुद्धि-संस्कार सहित) इंद्रियों से न्यारी हो जाती है। इस अवस्था में इसकी ग्रहण शक्ति असीमित हो जाती है।

शक्तियों और वरदानों का दाता

परमपिता परमात्मा शिव सर्वशक्तिवान हैं, वे ही शक्तिदाता और वरदाता भी हैं। परमात्मा शब्द में ही परमात्मा पिता का सत्य परिचय समाया हुआ है। परम का अर्थ है सर्वोच्च। संसार में अनेकानेक आत्मायें हैं जैसे देवात्मा, महात्मा, पुण्यात्मा, धर्मात्मा, साधारण आत्मा, पापात्मा आदि। परमात्मा इन सभी से ऊँचे हैं। जैसे कोर्ट कई होती हैं पर सुप्रीम कोर्ट एक होती है। मंत्री कई होते हैं पर प्रधानमंत्री उनमें से ही एक होता है, ऐसे ही करोड़ों आत्माओं में जो सुप्रीम है, प्रधान है, हेड है, मुख्य है, वही परमपिता परमात्मा है।

जैसे आत्मा ज्योतिबिन्दु स्वरूप है, परमात्मा पिता भी रूप में वैसे ही हैं, हाँ, वे गुणों में सिन्धु हैं। उनके बड़े होने का अर्थ है – पवित्रता, ज्ञान, गुण, शक्तियों में बड़े। वे सर्वात्माओं के माता-पिता, बन्धु-सखा, शिक्षक-सतगुरु हैं और धर्मग्लानि के समय सृष्टि पर अवतरित हो, पतित आत्माओं को पावन बनाने का दिव्य कर्त्तव्य करते हैं। जब आत्मायें पावन बन जाती हैं तो सृष्टि पर स्वर्ग की स्थापना हो जाती है और परमात्मा पिता अपने कर्त्तव्य की पूर्ति के बाद पुन: अपने परमधाम को लौट जाते हैं।

ईश्वरीय शक्तियाँ

भक्त लोग भी भगवान से शक्ति माँगते हैं, मंदिर में जाकर प्रार्थना करते हैं, 'इतनी शक्ति हमें देना दाता..' परन्तु प्रश्न यह है कि क्या माँगने मात्र से शक्तियाँ मिल जाती हैं? सदियों से मानवात्मायें भगवान से करबद्ध माँगें जा रही हैं और फिर भी मानवीय दुर्बलताएँ सर्वत्र प्रसारित (व्याप्त) हैं। इन मानवीय दुर्बलताओं का ही परिणाम है वैर, चिन्ता, हिंसा, भय, अपराध, उग्रवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता आदि। अत: मानवीय समाज को दुर्बलताओं से मुक्त कर शक्तिसंपन्न, निर्विघ्न, सदाचारी, सुखी और समृद्ध बनाने के लिए ईश्वरीय शक्तियों को प्राप्त करने का तरीका जानना अति अनिवार्य है।

संसार में जड़ पदार्थों में भी अपनी-अपनी शक्ति होती है। जैसे कुनीन के पौधे में मलेरिया को ठीक करने की शक्ति रहती है, पानी में शीतलता की शक्ति है, पृथ्वी में सहन करने की और सूर्य में ताप तथा प्रकाश की शक्तियाँ निहित हैं। जब छोटी-छोटी चीज़ों में भी अपनी-अपनी शक्तियाँ हैं तो सारे जगत के स्वामी पिता परमात्मा तो अनेक दिव्य और सूक्ष्म शक्तियों के भंडार हैं, कुछ अग्रलिखित हैं –

1. ज्ञान की शक्ति – भगवान ज्ञान के सूर्य हैं। उनमें सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के ज्ञान की शक्ति है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने से अंधकार दूर हो जाता है। चारों ओर रोशनी फैल जाती है। सूर्य की किरणें अनेक प्रकार की गंदगी, कीटाणुओं को

नष्ट कर देती हैं। सूर्य की सकाश मिलते ही पेड़-पौधे ऑक्सीजन देना शुरू कर देते हैं। जीवन सक्रिय हो जाता है। ऊर्जा का संचार होने लगता है। ऐसे परमात्मा पिता जो ज्ञान सूर्य हैं, उनका उदय होना अर्थात् विश्व से अज्ञानता के अंधकार का नष्ट होना। उनकी दिव्य शक्तियों की किरणें जब विश्व में फैलती हैं तो शक्तिहीन आत्मायें भटकने से, ठोकर खाने से बच जाती हैं। जीवन का परिवर्तन हो जाता है। विकारों की गंदगी, अवगुणों रूपी कीटाणु नष्ट होने लगते हैं। आत्मा कर्मेन्द्रियजीत, मायाजीत, विकर्माजीत और कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर लेती है।

2. गुणों की शक्ति – जैसे पानी का सागर विशालता को लिये हुए है, बाहर से ऊँची लहरें हैं, अंदर गहरी शान्ति है, शीतलता है। गहराई में रत्नों को छिपाकर रखता है। ऐसे ही परमात्मा सर्वगुणों के सागर हैं। आत्मा के व्यर्थ को निकालते हैं। जिसने उनमें डुबकी लगाई उसने सर्वगुणों रूपी रत्न पाये। असीम शान्ति का अनुभव किया। सच्चे नि:स्वार्थ प्यार का अनुभव, परमानंद का अनुभव सागर की गहराई में जाने से ही होता है। सागर बेहद का अनुभव कराता है, हद की दीवारें तोड़ देता है। गुणों का सागर परमात्मा शान्ति, प्यार और सुख से आत्मा को भरपूर कर देता है। यही परमात्म शक्ति है।

3. सर्व संबंध निभाने की शक्ति – जैसे लौकिक मात-पिता बच्चों को जन्म दे, उनकी पालना करते हैं। उन्हें अच्छी खुराक, अच्छी पढ़ाई से स्वस्थ और स्व-निर्भर बनाते हैं, संगदोष से बचाते हैं। ऐसे ही परमात्मा हम सब आत्माओं के सच्चे मात-पिता हैं। हमारी आँख खुलते ही वे सर्व शक्तियों की सकाश देकर, ज्ञान की पौष्टिक खुराक खिलाकर आत्मा को शक्तिशाली बना देते हैं। अपने श्रेष्ठ संग का रूहानी रंग लगाकर देह, देह के संबंध रूपी बंधनों से आत्मा को मुक्त कर देते हैं।

परमशिक्षक के रूप में उनकी शिक्षायें ही जीवन की रक्षा करती हैं। परमात्मा द्वारा दिये गए सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के ज्ञान से आत्मा विशालबुद्धि, दूरंदेशी बन जाती है। बने बनाये ड्रामा के ज्ञान से आत्मा निश्चिंत, अचल-अडोल, एकरस स्थिति में रहती है। ज्ञान की शक्ति से हर परिस्थिति को पार करना बहुत सहज हो जाता है।

परमसतगुरु के रूप से वे मार्गदर्शक बन श्रेष्ठ मत द्वारा विकारों रूपी भवसागर से हमें पार लगा देते हैं। गति और सद्गति, मुक्ति और जीवन्मुक्ति का वर्सा देते हैं। साथ-साथ कर्मों की गहन गति की समझ देकर श्रेष्ठ कर्म करना सिखाते हैं। विकारों और विकर्मों से मुक्त बना देते हैं। वर्तमान के साथ-साथ पूर्व के कर्मबंधनों से मुक्त कर पवित्रता के शिखर पर पहुँचा देते हैं।

कई लोग ऐसा समझकर भगवान से डरते हैं कि ना जाने वे सर्वसमर्थ कब क्या कर दें – किसी को मार दें, प्रलय ला दें, श्राप दे दें परन्तु भगवान सर्वसमर्थ होते भी सर्व के कल्याणकारी हैं। तीनों लोकों और तीनों कालों में वे कोई भी अकल्याण का कार्य कभी करते ही नहीं। इसीलिए वे शिव अर्थात् सदा कल्याणकारी, मंगलकारी हैं। उनकी हर शक्ति में, हर अभिव्यक्ति में विश्व के कल्याण की मिठास भरी होती है।

जैसे सूर्य से किरणें प्राप्त करने के लिए माँगने की नहीं वरन् उनके सम्मुख आने की ज़रूरत है इसी प्रकार ज्ञान-सूर्य भगवान से भी शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए मन-बुद्धि से उनके सम्मुख आने की ज़रूरत है। परमात्मा से शक्ति लेने के लिए उनके साथ मन-बुद्धि का सही कनेक्शन चाहिए।

मानव की बुद्धि ही मानव का तीसरा नेत्र है, अत: बुद्धि द्वारा परमधाम निवासी परमात्मा शिव के बिन्दु रूप, ज्योति स्वरूप को निहारते हुए, मन द्वारा यही संकल्प चलाने चाहिएँ, ''परमप्रिय परमात्मा पिता, आप सर्वशक्तियों के भण्डार हैं, दाता हैं। आप कल्याणकारी और रहमदिल हैं। आप सर्वसमर्थ और विश्वपरिवर्तक हैं। मैं आत्मा आपका अविनाशी बच्चा हूँ। जैसे आप हैं, वैसा ही मैं भी हूँ। आप सर्व शक्तिवान का बच्चा मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, सर्व का कल्याणकारी और रहमदिल हूँ। प्यारे शिवबाबा, किरणों के रूप में आपकी शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, कल्याण की शक्ति, पवित्रता की शक्ति, ज्ञान की शक्ति मुझ आत्मा पर उतर रही हैं। मैं इन शक्तियों से भरपूर होता जा रहा हूँ। इन शक्तियों रूपी किरणों ने मेरे चारों ओर लाइट का कवच निर्मित कर दिया है जिसमें मैं सदा सुरक्षित हूँ। ये शक्तियाँ मुझसे बिखर कर चारों ओर विश्व के वायुमण्डल तथा आत्माओं में बल भर रही हैं।''

इस प्रकार मनन करते-करते आत्मा को असीम आत्मबल और ईश्वरीय बल की अनुभूति होती है और इस अनुभूति के बल से उसके साकार कर्मों में असंभव को भी संभव करने जैसी चमत्कारी शक्ति आ जाती है। जैसे आजकल मोबाइल कम्पनियों ने जहाँ-तहाँ मोबाइल टावर लगाये हैं। ये टावर अपनी किरणों द्वारा सिग्नल देकर ग्राहकों को बात करने की सुविधा

प्रदान करते हैं। जो मोबाइल इन किरणों के क्षेत्र से बाहर होता है, उसे सुविधा नहीं मिल पाती। इसी प्रकार, परमात्मा पिता भी सर्वशक्तियों और वरदानों के ऊँचे से ऊँचे टावर हैं। वे भी अपनी किरणों के माध्यम से शक्तियों और वरदानों का अनुभव आत्मा रूपी बच्चों को करवाते हैं।

ईश्वरीय वरदान

शक्ति प्राप्त करने में थोड़ा पुरुषार्थ करना पड़ता है परन्तु वरदान का अर्थ है बिना माँगे, बिना पुरुषार्थ किये सहज और अनायास होने वाली प्राप्ति। वर्तमान समय ही वरदानी है। जिस भगवान को, लंबी-लंबी साधनायें करके, जीवन को अनेक कष्ट देकर, अनेक जन्मों में हम नहीं पा सके, वो दयालु परमात्मा वर्तमान संगमयुग (कलियुग और सतयुग का संधिकाल) में हमारे सामने साकार में अवतरित हैं।

आत्मानुभूति, परमात्मानुभूति तथा जीवन्मुक्ति का अनुभव एक सेकंड में कर लेना ही उनका वरदान है। आत्मा के जन्म-जन्म के विकार और पाप उनकी दृष्टि मात्र से समाप्त हो जाते हैं। उनके वरदानों से आत्मा की आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की दरिद्रताएँ समाप्त हो जाती हैं। सम्मुख आना ही वरदान पाना है। मन एकाग्र हो जाना, दिव्यता का प्रकाश मन में खिल जाना, मन का सकारात्मक और शक्तिशाली बन जाना, बोल का वरदानी बन जाना और दृष्टि में रहम तथा कल्याण की भावना आ जाना – ये सब ईश्वरीय वरदानों का ही प्रतिफल है। जिसका जितना दिल का स्नेह है उतना उसे वरदानों की प्राप्ति होती है। फिर दान करने से वरदान बढ़ते हैं। सफल करने से सफलता मिलती है।

वरदाता के वरदानों का अनुभव करने के लिए दिल बहुत सच्चा साफ चाहिए। अन्दर एक बाहर से दूसरा रूप न हो। कथनी-करनी समान हो, याद अव्यभिचारी हो। एक बल एक भरोसा, इसी आधार पर चलते रहें। जिनके पास दिखावा नहीं है, जो पूरे ट्रस्टी हैं, परमात्मा की अमानत में ख्यानत नहीं करते, श्रीमत के कदम पर कदम रखकर चलते हैं, उन्हें हर कदम में वरदानों की अनुभूति होती है, जीवन ही वरदानी बन जाता है।